विषय– पालि

(कक्षा–9)

कोविड–19 महामारी के कारण शैक्षिक सत्र–2021–22 में विद्यालयों में समय से पठन–पाठन का कार्य न हो पाने की स्थिति में सम्यक विचारोपरान्त विषय विशेषज्ञों की समिति द्वारा निम्नवत् 30 प्रतिशत पाठ्यक्रम कम किये जाने की अनुशंसा की गयी हैः–

1-गद्य पालिजातकावलि (पाठ से 5 से 6 तक)

2–पद्य धम्मपद (पाठ–5)

3– सहायक पुस्तक– बोधिचर्या विधि (महामंगल गाथा)

4–निबन्ध– जम्बूदीपो, सारनाथो

उपर्युक्त के अनुक्रम में 70 प्रतिशत का पाठ्यक्रम निम्नवत् है–

विषय–पालि

कक्षा–9

इस विषय में प्रश्न–पत्र 70 अंकों का केवल एक प्रश्न–पत्र तीन घण्टे का होगा।

1 गद्य–पालिजातकावलि (पाठ 1 से 4 तक) **15**

(क) दो अवतरणों में से किसी एक अवतरण का संदर्भ सहित हिन्दी में अनुवाद। 2+8=10

(ख) किन्हीं दो जातकों में से किसी एक जातक की कथा हिन्दी अथवा अंग्रेजी में। 05

2–पद्य धम्मपद (यमक वग्गो से पुप्फवग्गो तक) **15**

(क) दो गाथाओं में से किसी एक गाथा का हिन्दी अनुवाद। 05

(ख) दो वग्गों में से किसी एक वग्ग का हिन्दी अथवा अंग्रेजी में सारांश। 05

(ग) धम्मपद के पाठ 1 से 4 के अन्तवर्ती गाथा का लेखन जो इस प्रश्न पत्र मे न आयी हो। 05

3–सहायक पुस्तक बोधिचर्या विधि– (परित्राण परिच्छेद से आवाहन तक) **10**

(किसी एक गाथा की हिन्दी व्याख्या अथवा पूजा विधि का वर्णन)।

4–व्याकरण 3+2+5+5=**15**

(क) शब्द रूप–

i. पुल्लिंग–बुद्ध, पुरिस।

ii. स्त्रीलिंग–लता, रति।

iii. नपुंसकलिंग–फल, अट्ठि।

(ख) धातु रूप वर्तमान काल–

पठ, गम, चुर, रूध सक, हिंस

(ग) संधि–स्वर संधि

सरो लोपो सरे, परो क्वचि, न द्वे वा, यवा सरे, ए ओ नं।

(घ) समास–

तत्पुरूष एवं बहुब्रीहि की सामान्य परिभाषा तथा उदाहरण।

6–अनुवाद **05**

हिन्दी के पाँच वाक्यों का वर्तमान काल की क्रिया में अनुवाद

अथवा

निबन्ध– पालि भाषा में पाँच वाक्य लिखना।

भगवा बुद्धो, धम्मपदं, ममविज्जालयो, जम्बूदीपो, सारनाथ चत्तारि अरियसच्चानि।

7–पालि साहित्य के इतिहास का संक्षिप्त परिचय– **05**

प्रथम संगीति, सुत्तपिटक–दीघनिकाय, मज्झिमनिकाय, संयुक्तनिकाय, अंगुत्तरनिकाय, खुद्दकनिकाय।

निर्धारित पुस्तकें–

(1) पालिजातकावलि– सम्पादक,प्रो0 बटुक नाथ शर्मा, प्रकाशक, मास्टर खेलाड़ीलाल संकटा प्रसाद वाराणसी।

(2) धम्मपद– सम्पादक, भिक्षु धर्मरक्षित, प्रकाशक–महाबोधि सभा, सारनाथ, वाराणसी।

(3) सिगालोवाद सुत्त– अनुवाद, डॉ0 भिक्षु स्वरूपानन्द सम्यक प्रकाशन, नई दिल्ली।

(4) पालि प्रबोधिनि– अद्यादत्त ठाकुर प्रकाशक–पुस्तक माला, लखनऊ।

(5) मैनुअल ऑफ पालि–सी0सी0 जोशी, प्रकाशक ओरियन्टल बुक एजेन्सी, पूना।
(6) पालि महाव्याकरण– भिक्षु जगदीश कश्यप,–महाबोधि सभा, सारनाथ, वाराणसी।
(7) पालि व्याकरण– भिक्षु धर्मरक्षित, प्रकाशक ज्ञान मण्डल लिमिटेड वाराणसी।
(8) पालि का साहित्य का इतिहास– भिक्षु धर्मरक्षित, प्रकाशक ज्ञान मण्डल लिमिटेड वाराणसी।